International Journal of Applied Research 2021; 7(9): 256-259

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 256-259
www.allresearchjournal.com
Received: 17-07-2021
Accepted: 25-08-2021

Mohd. Ahmad
Research Scholar, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

Dr. Anup Baluni
Associate Professor, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

Corresponding Author:
Mohd. Ahmad
Research Scholar, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

माध्यमिक स्तर एवं मदरसा के छात्र–छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन।

Mohd. Ahmad and Dr. Anup Baluni

सारांश
प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया कि' माध्यमिक स्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।न्यादर्श के रूप मेंउत्तर प्रदेश के माध्यमिकस्तर एवं मदरसों के 200 बालक–बालिकाओं का चयन किया गया। माध्यमिक स्तर के बालकों की आत्म–सम्प्रत्यय में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है अतः पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई।मदरसों के बालक एवं बालिकाओं के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस प्रकार पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई।

मुख्य शब्दावली– आत्म–सम्प्रत्यय

प्रस्तावना:
शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। जिसके फलस्वरूप व्यक्ति के मन, बुद्धि एवं आत्मा के विकास के साथ–साथ आत्मनिर्भरता एवं स्वावलम्बन का गुण भी जन्म लेता है। जो कि जीविको पार्जन के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है। हम समस्याओं के निराकरण के साधनों का प्रयोग करते हुए समुचित ढ़ंग से जीविकापार्जन करते हैं। भारतीय परिवेश में अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय सभी बच्चों को समुचित शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। यद्यपि भारत में विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा सभी वर्गो के बच्चों को शिक्षित करने के प्रयास जारी है। फिर भी सभी को अधिकतम शिक्षा प्राप्त करने के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं।शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने को इस योग्य बनाने का प्रयास करता है कि वह अपने जीवन का निर्वाह समुचित ढ़ंग से कर सके।
किसी भी मनुष्य को स्वयं का अहसास, जिसमें वह अपने अतीत एंव भविष्य को समझता है, व अपने आस– पास के लोगो , मित्रों, सहकर्मियों, रिश्तेदारों, तथा अतिथियों को भी जानता है। उसे अपने जीवन तथा मृत्यु का भी अहसास होता है। वह अपने जीवन की निश्चित पहचान, उद्देश्य एवं अर्थ को प्राप्त करने में निरन्तर लगा रहता है। आत्म/स्वयं को अवधारणा यह है कि यह व्यक्ति की प्रक्रिया को दिशा प्रदान कर अचेतन मन के उपयोगी और रचनात्मक पक्ष को चेतन बना देता है। इससे मन की एक सकारात्मक प्रक्रिया की ओर लें जाया जाता है। जिससे आत्म विकास हो सके। यही आत्म की अवधारण भी है। आत्म से आत्मसात् होना एक सचेतन आन्तरिक प्रयास है। इस प्रक्रिया के द्वारा मनुष्य अपनी शक्तियों ,क्षमताओं, कमियों आदि को समझ सकता है। मनुष्य अपनी बाह्य क्रियाओं के प्रति भी सजग, सतर्क, जागृत तथा विवेकशील भी बन जाता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वयं से परिचय कराने के लिए प्रेरित करता है तथा अपने अधिगम के लिए स्वयं जिम्मेदार बनाने के लिए तैयार करना चाहिए। कक्षा में मौजूद शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना जरूरी है। शिक्षार्थियों के अधिगम एंव आत्मविकास की प्रक्रिया में शिक्षक को सहायक का कार्य करना चाहिए।
बालकों की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं योग्यताओं का अध्ययन करना शोध करना एवं निष्कर्ष के आधार पर नीति निर्धारण, शिक्षण विधि एवं पाठ्यक्रम का निर्माण, सुधार एवं परिवर्तन हेतु सुझाव देना शिक्षाविदों एवं शिक्षा शास्त्रियों का नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है।
शिक्षा का समुदाय से अटूट संबंध है जिसके कारण कभी समुदाय शिक्षा को तथा कभी शिक्षा समुदाय को प्रभावित करती है। समुदाय की आवश्यकतानुसार ही शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। समुदाय के मूल्यों, ओदर्शो, मान्यताओं, आवश्यकताओं, आर्थिक स्थिति, आदि का प्रभाव शिक्षा पर पूर्णरूपेण परिलक्षित होता है। विशिष्ट समुदाय की गहन जानकारी उसमें रह रहे व्यक्तियों को होती है।

उद्योगों का पूर्णतया ज्ञान उस समुदाय में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को होता है।व्यक्ति को निजत्व का बोध भी शिक्षा द्वारा ही होता है। टात्म सम्प्रत्यय की अवधारणा व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ स्पष्ट होती जाती है।

आत्म सम्प्रत्यय किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। व्यक्ति का समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामान्य व्यवहार आत्म–सम्प्रत्यय द्वारा प्रभावित होता है। आत्म सम्प्रत्यय की परिभाषा बुडवर्थ के अनुसार इस प्रकार है

''आत्म सम्प्रत्ययव्यक्ति का निजी विचार है, जो उसके स्वयं के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, वस्तुओं एवं भावनाओं पर आधारित होता है।''

आत्म सम्प्रत्यय के द्वारा स्वास्थ्य, आंवेगात्मक गुण, शैक्षिक स्तर, बौद्धिक योग्यता, आदत तथा व्यवहार, संवेगात्मक प्रवृत्तियाँ, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

वह प्रत्यक्षीकरण या अनुभव, जो मनुष्य अपने ही संबंध में करता है। यह वह प्रमुख कारक है जो सम्पूण॰ जीवन को एक दिशा प्रदान करता है।

जेम्स ड्रेवर (1986) :– ''आत्म शब्द का प्रयोग बहुधा अहं के अर्थ में किया जाता है, यह वह एजेन्ट है जो अपने ही पहचान के स्थायित्व के संबंध में चेतन रहता है।

आइजनेक एवं अनके साथियों (1972) ''अनुभवात्मक अनुसंधान में आत्म का अर्थ मूल रूप से उस प्रत्यक्षीकरण से है जो विषयी अपने ही संबंध में करता है।

जी0 पी0 शेरी के अनुसार, ''प्रत्यक्षीकरण, विश्वास, अभिवृत्तियां ओर भावनाएँ जो छात्र के व्यक्तित्व विचार की विशेषताएँ हैं। उसे आत्म सम्प्रत्यय कहते हैं।''

आत्म अवधारणा से आशय उन सभी आयामों से है जिनसे व्यक्ति स्वंय से परिचित होता हैं इसमें व्यक्ति एक बार जो धारणा बना लेता है, उसे आसानी से नहीं बदलता, क्योंकि इसमें गूंढ विश्वासों, दृष्टिकोणों और मूल्यों का प्रभाव निहित होता है ।आत्म सम्प्रत्यय की अवधारणा व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ स्पष्ट होती जाती है। बालक के भविष्य का उद्देश्य उसके शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ा होता है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि उसके उत्तम निष्पादन का परिणाम होती है। शैक्षिक निष्पत्ति के ज्ञान से बालक की भावी योजनाओं के विकास एवं सुधार के लिए सार्थक प्रयास किया जा सकता है।

आत्म सम्प्रत्यय के अवयव;ब्वउचवदमदजे वि मसि ब्वदबमचजद्ध आत्म प्रत्यय के तीन प्रमुख अवयव हैं–

1. प्रत्यक्ष परक अवयव–शरीर की प्रतिमा (Image) आती है तथा दूसरों पर क्या छाप छोड़ताहै, यह भी उसके प्रत्यक्षपरक अवयव है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति शारीरिक रूप से कितना आकर्षक है। अतः इसे शारीरिक आत्म प्रत्यय (Physical Self -Concept) भी कह सकते है।
2. प्रत्ययात्मक अवयव (Conc..... Component)& इसमें व्यक्ति की यह विशेषता आती है, जिसके कारण वह दूसरों से भिन्न है, इसमें उस व्यक्ति की योग्यताएँ एवं अयोग्यताएँ भी आती है। इसके अन्तर्गत जीवन के समायोजन से सम्बन्धित विशेषताएँ भी आती है, जैसे– ईमानदारी, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, साहस अथवा इन गुणों के विपरीत गुण। इस अवयव को मनोवैज्ञानिक आत्म प्रत्यय (Psychological Self Concept) भी कहते है।
3. अभिवृत्तिपरक अवयव (A..... Self Concept)& इसमें व्यक्ति के स्वयं के प्रतिभाव (Feelings) आते है, इसके अन्तर्गत वह अभिवृत्तियाँ आती है जो व्यक्ति के आत्म सम्मान, आत्म उपागम, गर्व आदि से सम्बन्धित होती है, इसके व्यक्ति के विश्वास, धारणाएँ एवं विभिन्न प्रकार के मूल्य, आदर्श और आकांक्षाएँ भी

बालक देश के भाग्य निर्माता है उसके आन्तरिक गुणों, अंर्तनिहित शक्तियों को प्रकटन तथा मूल्य प्रवृत्तियों का शोधन–परिमार्जन शिक्षा द्वारा ही संभव है।

व्यक्ति परिवार, समाज एवं राष्ट्र का निर्माता होता है उसकी श्रम शक्ति, संघर्ष शक्ति से सुदृढ़ एवं समृद्ध होता है। उसके मूल्य, आकांक्षाएँ, प्राथमिकताएँ, योग्यताएँ व उपलब्धियां वास्तव में राष्ट्र निर्माण के लिए एक सुदृढ़ नींव का कार्य करती है, इन सबके अभाव में किसी भी व्यक्ति की उन्नति नहीं हो सकती है।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं विकास में वहां के जिम्मेदार नागरिकों, सफल व्यवसायी और अपने कार्य में कुशल भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों के योगदान पर निर्भर होता है, जो राष्ट्र जितना अधिक धन उत्पन्न करने का श्रोत बनाता है एवं जिस राष्ट्र के पास अधिक आर्थिक संसाधन होता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक समृद्ध एवं विकसित होता है।

अध्ययन में प्रयुक्त पदों की परिभाषा :

(क) आत्म–सम्प्रत्यय

आत्म–सम्प्रत्यय किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। व्यक्ति का समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामान्य व्यवहार स्व–प्रत्यय द्वारा प्रभावित होता है।

स्व–प्रत्यय की परिभाषा वुडवर्थ ने इस प्रकार दी है। ''स्व–प्रत्यय व्यक्ति का निजी विचार है, जो उसके स्वयं के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, वस्तुओं एवं भावनाओं पर आधारित होता है।''

डॉ. जी.पी. शेरी एवं अन्य के अनुसार ''प्रत्यक्षीकरण, विश्वास, अभिवृत्तियाँ और भावनाएं जो छात्र के व्यक्तिगत विचार की विशेषताएं हैं, उसे स्व–प्रत्यय कहते हैं।''

स्व–प्रत्यय के द्वारा स्वास्थ, आवेगात्मक गुण, शैक्षिण–स्तर, बौद्धिक योग्यता, आदत तथा व्यवहार, संवेगात्मक प्रवृत्तियां, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं।

1. माध्यमिकस्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्ययका तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं।

1. माध्यमिकस्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय मेंकोई सार्थक अंतर नहीं है। इस मुख्य परिकल्पना की दो उप–परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं –

i. माध्यमिकस्तर के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय मेंकोई सार्थक अंतर नहीं है।

ii. मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय मेंकोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

शोध अध्ययन की समस्या एवं शोध उद्देश्य निर्धारण के पश्चात् अध्ययन का सीमाकंन किया जाता है चूंकि समस्या का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है अतः सीमित अवधि, साधन एवं सुविधाओं में इसका अध्ययन संभव नहीं है।अतः समय साधन एवं सुविधाओं को दृष्टिकोण रखते हुए अध्ययन की सीमा का निर्धारण किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्नलिखित बिन्दुओं में परिसीमित किया गया है।

1. सम्पूर्ण देश में जगह–जगह माध्यमिकस्तर एवं मदरसे स्थापित हैं जिनका सम्पूर्ण अध्ययन संभव नहीं है। अतः

शोधकर्ता ने उत्तर प्रदेश का चयन किया है, और उसमें सहारनपुर क्षेत्र को चुना है।

2. न्यादर्श के रूप मेंमाध्यमिकस्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं का चयन किया गया है, जिनकी संख्या 200 निर्धारित की गयी है।
3. बालक–बालिकाओं में माध्यमिक स्तर के ही बालक–बालिकाओं को चयन किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अनुसंधान की समस्या तथा परिकल्पना का निरूपण कर लेने के पश्चात् शोधकर्ता के समक्ष परिकल्पना के सत्यापन की समस्या उत्पन्न होती है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है; जिसके आधार पर आंकड़ों को एकत्रित किया गया तथा 'टी' परीक्षण के द्वारा आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

माध्यमिकस्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

माध्यमिकस्तर एवं मदरसों के बालक–बालिकाओं के आत्म–सम्प्रत्ययका तुलनात्मक विवेचन किया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रतिभा देव सिंह के द्वारा निर्मित आत्म–सम्प्रत्ययपरीक्षा को प्रशासित करके बालक–बालिकाओं के आत्म–सम्प्रत्ययअवधारणा का मापन किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर आत्म–सम्प्रत्ययअवधारणा का विवेचना किया गया।

इस परीक्षण के द्वारा किसी भी छात्र के व्यवहार को आसानी से समझा जा सकता है। आत्म–सम्प्रत्ययके द्वारा किसी भी छात्र का समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामान्य व्यवहार प्रभावित होता है।

यहाँ पर आत्म–सम्प्रत्ययसे तात्पर्य – "प्रत्यक्षीकरण, विश्वासों, अभिवृत्तियों और भावनाओं से है, जो व्यक्ति अपने स्वयं की विशेषताओं को हिस्से के रूप में देखता है।" स्वास्थ्य एवं शरीर, बौद्धिक योग्यता, शैक्षिक स्तर, व्यवहार, मानसिक–स्वास्थ्य, भावुक प्रवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर व्यक्ति की अपने स्वयं की अवधारणाऐं हैं। विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के स्व–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए उनकी स्व–प्रत्यय अवधारणा का मापन किया गया।

आत्म–सम्प्रत्ययअवधारणा पर बालक–बालिकाओं के माध्य, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य का विस्तृत विवरण सारणी संख्या 1 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 1: माध्यमिक के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय के प्राप्ताकों के मध्य सार्थकता के अन्तर की जांच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

समूह	माध्य	मानक विचलन	संख्या	'टी' मूल्य	P
बालक	33.69	5.61	128	2.61	.05 पर सार्थक
बालिका	35.83	5.52	72		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के बालकों की स्वत्व–बोध अवधारणा में काफी अंतर है। यह अंतर .05 स्पर पर सार्थक है। माध्यमिक स्तर के बालकों की आत्म–सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .05 स्तर पर है।

अतः पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शून्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शून्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है

समूह में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्ययका स्तर अधिक पाया गया इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि इन्हें अपने क्षमता पर पूरा विश्वास है तथा ये विद्यालय के वातावरण में अपने को अच्छी तरह समायोजित कर लेती हैं। इसका दूसरा मुख्य कारण यह हो सकता है कि बालिकाएं अपने मित्र से प्रेरित होकर अपनी आदतों में सुधार कर रही है इससे भी आत्म–सम्प्रत्ययउच्च होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्ययपर उनके माता–पिता की आकांक्षा एवं विद्यालय वातावरण का प्रभाव है तथा अपने मित्र समूह से अधिक प्रभावित हैं। आत्म–सम्प्रत्ययपर लिंग–भेद, सामाजिक स्थिति एवं मानसिक योग्यता का प्रभाव होता है।

माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्ययकी व्याख्या प्राप्तांकों के आधार पर की गई जिसका विवरण सारणी संख्या 2 एवं 3 में दिया गया है।

सारणी संख्या 2: माध्यमिक स्तर के बालक बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय के अनुसार संख्या का वितरण

क्र.सं.	प्राप्तांक	व्याख्या	बालक	बलिका
1	20 या कम	बहुत खराब आत्म–सम्प्रत्यय	00	01
2	21–26	खराब आत्म–सम्प्रत्यय	19	01
3	27–38	औसत आत्म–सम्प्रत्यय	87	49
4	39–44	अच्छा आत्म–सम्प्रत्यय	17	14
5	45 या अधिक	बहुत अच्छा आत्म–सम्प्रत्यय	05	07
			128	72

सारणी संख्या 2 से यह स्पष्ट 05 बालक एवं 07 बालिका की स्वत्व बोध अवधारणां बहुत अच्छी है। से 17 बालक एवं 14 बालिका बालकों की स्वत्व बोध अवधारणा अच्छी पायी गयी। 87 बालक 49 बालिका की स्वत्व बोध अवधारणा औसत पायी गई। 19 बालक एवं 01 बालिका की स्वत्व बोध अवधारणा खराब पाई गयी। इसी प्रकार से 01 बालिका बालक की स्वत्व बोध अवधारणा बहुत खराब पाई गयी।

सारणी संख्या 3: मदरसों के बालक–बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्ययके प्राप्ताकों के मध्य सार्थकता के अन्तर की जांच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

समूह	माध्य	मानक विचलन	संख्या	'टी' मूल्य	P
बालक	14.22	3.10	62	1.39	.05 पर सार्थकनहीं
बालिका	13.37	3.36	38		

मदरसों के बालक एवं बालिकाओं के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। है। इस प्रकार पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई। बालक–बालिकाओं के आत्म–सम्प्रत्ययमें कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त होने का मुख्य कारण यह है कि वर्तमान युग परिवर्तन का युग है जनसंचार माध्यमों का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है जिससे बच्चों में आत्म–सम्प्रत्यय सुदृढ़ हो रहे हैं। वे दूसरों की

सहायता को तत्पर होते हैं तथा एक दूसरे का दुख–सुख बाँटने की भावना उनमें प्रबल हो रही है। अन्य संभावित कारण यह है कि बच्चे अपने शिक्षक, माता पिता को अपना आदर्श मानते हैं तथा उनके पदचिन्हों का अनुसरण करते हैं, यह भी हो सकता है कि बच्चों में दूसरों की सहायता करने का तथा दूसरों की भलाई के लिए कार्य करने का भावना का उत्पन्न होना यह परिवर्तन शिक्षकों के प्रेरित करने पर हुआ हो।

सारणी संख्या 4: मदरसों के बालक बालिकाओं की आत्म–सम्प्रत्यय के अनुसार संख्या का वितरण

क्र.सं.		प्राप्तांक	बालक	बलिका
1.	20 या कम	बहुत खराब आत्म–सम्प्रत्यय	9	00
2.	21–26	खराब आत्म–सम्प्रत्यय	13	6
3.	27–38	औसत आत्म–सम्प्रत्यय	7	6
4.	39–44	अच्छा आत्म–सम्प्रत्यय	19	14
5.	45 या अधिक	बहुतअच्छा आत्म–सम्प्रत्यय	14	12
		संख्या	62	38

सारणी संख्या 2 से यह स्पष्ट 14 बालक एवं 12 बालिका की आत्म–सम्प्रत्ययबहुत अच्छी है। से 19 बालक एवं 14 बालिका बालकों की आत्म–सम्प्रत्ययअच्छी पायी गयी। 7 बालक 6 बालिका की आत्म–सम्प्रत्ययऔसत पायी गई। 13 बालक एवं 6 बालिका की आत्म–सम्प्रत्ययखराब पाई गयी। इसी प्रकार से 09बालक की आत्म–सम्प्रत्ययबहुत खराब पाई गयी।

शिक्षा मनुष्य के पूर्ण विकास का साधन है, जिससे वह अपनी सर्वोत्तम शक्ति के अनुसार मानवीय जीवन में भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के साथ अपना समन्वय स्थापित करने की क्षमता प्रदान कर लेता है। शिक्षा का अर्थ और उद्देश्य मात्र सूचना प्रदान करना नहीं, वरन् विद्यार्थी को सैद्धान्तिक रूप से सार्वभौमिक ज्ञान प्रदान करना है, ताकि वह राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें। सर्वप्रथम आवष्यकता स्वयं को पहचानने की है। मनुष्य जीवन में दो सीढीयों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है, ये दो सीढीयां हैं सफलता एवं असफलता कुछ मनुष्य जो प्रारंभ से ही जीवन को सफल बनाने के कार्य में जुट जाते हैं, वे अपने गुणों में वृद्धि करते हुए सफलता की सीढी पर चढते चले जाते हैं। उनमें जीवन पथ पर आने वाली बाधाओं, को पार करने की क्षमता होती है, बड़ी से बड़ी बाधा को आसानी से पार कर जाते है , (ऐसा इसलिए, क्योंकि यही बाधाएँ उन्हें आगे बढने के लिए प्रेरित करती है) आचार्य तुलसी के शब्दों में "मानव का जीवन छाया और प्रकाशमय है, उसमें प्रकाश के साथ छाया में ही मनुष्य डूब जाए तो वह उसकी मदद करने वाली न होकर मारक होगी।

सन्दर्भ

1. गुप्ता, एस. पी. गुप्ता, ए., (2004) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , शारदा पुतक, इलाहबाद
2. मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
3. पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
4. राय, गीता (2011). अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
5. Bhatnagar AB, Bhatnagar, Meenakshi, Bhatnagar, Anurag. Development of learner and Teaching Learning Process. Surya Publication, Meerut.
6. Chauhan SS. Advanced Education Psychology, Vikas Publication House, New Delhi.
7. शर्मा (1978) ने उच्च एवं निम्न उपलब्धि के स्व–प्रत्यय एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन
8. ज्ञानी (2000) ने जाति, धर्म व लिंग–भेद के सम्बन्ध में किशोरों के स्व–प्रत्यय का अध्ययन किया।